Bhutan liver patient to go home

TIMES NEWS NETWORK

Kolkata: After undergoing successful liver transplant at Apollo Gleneagles Hospitals (AGH), Kolkata, Norjay Tshering is ready to return to Bhutan after being discharged on Tuesday .

Tshering, 47, underwent the surgery on July 7. This was the first successful liver transplant at a private hospital in eastern India. The state-run SSKM Hospital had carried out a successful liver transplant on a seven-month-old boy last year.

Tshering had been receiving treatment under Dr Mahesh Goenka at AGH for the past six years. He was suffering from refractory ascites (accumulation of fluid in the stomach) and developed intermittent hepatic coma recently. Liver transplant was the only option left.

TRANSPLANT BOON

Tshering's wife Evalin (45) volunteered to be the donor.

A team, including Dr Goenka, director of the hospital's gastroenterology wing, Dr Debasis Debasis Banerjee, specialist in vascular and transplantation surgery of AGH Kolkata, and transplant surgeon Dr Subhash Gupta of Indraprastha Apollo Hospitals performed the marathon surgery on July 7. Evalin was discharged on July 17. Doctors said Tshering could now look forward to leading a normal life.

"We have proved once again that we have the ability, expertise and infrastructure to perform such cutting-edge intervention and patients need not travel elsewhere," said Dr Rupali Basu, CEO of AGH (eastern region).

An elated Tshering said more end-stage liver patients should explore the option of liver transplant.

Adult liver transplant a success

A STAFF REPORTER

A Bhutanese who underwent the first adult liver transplant in eastern India three weeks ago was released from a private hospital in the city on Tuesday.

Norjay Tshering, 47, a manager at a cement company in Bhutan, had been suffering from a liver disease that caused fluid accumulation in the stomach. His condition worsened recently, prompting doctors at Apollo Gleneagles Hospitals to advise him to undergo a liver transplant.

Norjay's wife Evalin, 45, donated part of her liver, which was implanted in him on July 7. "I am feeling better now. I can walk and eat," Norjay said before being released from the hospital. Doctors said he could return to normal life. Evalin was released 10 days ago.

"The normal life expectancy of a liver transplant patient is five to 10 years," said Mahesh Goenka, a gastroenterologist at Apollo Gleneagles Hospitals. Goenka was part of the team led by transplant surgeon Subhas Gupta from Apollo Hospital, Delhi, that conducted the transplant.

कोलकाता में भूटानी मरीज के लीवर का जटिल प्रत्यारोपण किया गया

आस पास

प्रभात खबर

कोलकाता, बुधवार, 28 जुलाई, 2010

पूर्वी भारत में पहला वयस्क लीवर ट्रांसप्लांट

कोलकाता : हाल में अपोलो ग्लेनइगल्स अस्पताल की ओर से पहला वयस्क लीवर ट्रांसप्लांट किया गया. ऑपरेशन के 20 दिनों के बाद लीवर ट्रांसप्लांट से गुजरे मरीज को अस्पताल से डिस्चार्ज कर दिया गया. अस्पताल के लीवर ट्रांसप्लांट प्रोग्राम के प्रमुख इंस्टीट्यूट ऑफ गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी के निदेशक डॉक्टर महेश गोयनका हैं. इस टीम में ट्रांसप्लांट सर्जन,एनेस्थेसियोलॉजिस्ट्स, इनटेनसिविस्ट्स, हेपाटोलॉजिस्ट्स, नर्सेस व उपयुक्त लैब, ब्लड बैंक व रेडियोलॉजी की भी सुविधा है. लीवर ट्रांसप्लांट सिरॉयसिस, अत्यधिक जॉन्डिस, जेनेटिक गड़बड़ी, ड्रग से हुए नुकसान व अन्य जटिलताओं के मामलों में किया जाता है. इसमें मैचिंग डोनर से लीवर का एक हिस्सा ले लिया जाता है और मरीज में ट्रांसप्लांट कर दिया जाता है. गत सात जुलाई को हुए इस ऑपरेशन के बाद अस्पताल ने दावा किया है कि पूर्वी भारत में ऐसा यह पहला ऑपरेशन है, जो अपने आप में मील का पत्थर है. इस ट्रांसप्लांट से भूटान के 47 वर्षीय नागरिक नोरजे शेरिंग को गुजरना पड़ा. उन्हें लीवर की अंतिम चरण की बीमारी थी और वह डॉक्टर महेश गोयनका उपचार करवा रहे थे. उन्हें रिफ्रैक्टरी एसाइट्स (पेट में तरल का जमना) था. उन्हें हाल ही में इंटरमिटेंट हेपाटिक कोमा भी हो गया. लीवर ट्रांसप्लांट ही एकमात्र सहारा था. उनकी पत्नी 45 वर्षीय इवेलिन शेरिंग ने दानकर्ता(डोनर) बनना कबूल किया और उनका लीवर जांच में मैच कर गया. गत सात जुलाई को ऑपरेशन किया गया. डोनर को ऑपरेशन के दसवें दिन और हासिल करने वाले को बीसवें दिन अस्पताल से स्वस्थ हालत में छोड़ दिया गया. अस्पताल की सीईओ डॉक्टर रुपाली बसु ने कहा कि इस ऑपरेशन से यह साबित होता है कि अत्याधुनिक सर्जरी की काबिलियत और जरूरी ढांचा अस्पताल में है. उन्होंने लीवर से जुड़ी समस्याओं के संबंध में जागरूकता फैलाने पर भी जोर दिया.

कोलकाता जागरण
जमशेदपुर, 28 जुलाई, 2010
www.jagran.com

लीवर प्रत्यारोपण

मरीज के साथ अस्पताल की टीम जागरण

अपोलो हास्पिटल्स में लीवर का सफल प्रत्यारोपण

कोलकाता : अपोलो ग्लेनिग्लेस हास्पिटल्स ने एक व्यक्ति के शरीर में लीवर का सफलतापूर्वक प्रत्यारोपण कर नया कीर्तिमान दर्ज किया है। पूर्वी भारत में पहली बार किसी जीवित व्यस्क व्यक्ति की इस तरह की सर्जरी की गई है। अपोलो के इंस्टीच्यूट आफ गैस्ट्रोइंट्रोलाजी के निदेशक डा. महेश गोयनका ने मंगलवार को इसकी जानकारी देते हुए बताया कि भूटान के रहने वाले 47 वर्षीय नोरजय शेरिंग के शरीर में लीवर का प्रत्यारोपण किया गया। उनकी लीवर की बीमारी अंतिम चरण में पहुंच गई थी और प्रत्यारोपण ही एकमात्र उपाय था। उनकी 45 वर्षीया पत्नी इवालिन शेरिंग ने लीवर का दान किया। डा. गोयनका के नेतृत्व में सर्जनों, चिकित्सकों व अन्य चिकित्सा कर्मियों की टीम ने गत सात जुलाई को अस्पताल में सर्जरी को सफलतापूर्वक अंजाम दिया। सर्जरी के महज 12 दिनों के अंदर नोरजय व 10 दिनों में उनकी पत्नी को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई।

অ্যাপোলোর মুকুটে

নতুন পালক

সি ই ও ডাঃ রূপালি বসু রোগী নরগে শেরিং-কে আশ্বস্ত করছেন। পাশে ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা

কলকাতা অ্যাপোলো গ্লেনঈগলস্-এর মুকুটে যুক্ত হল আরও একটি পালক। হাসপাতালে গত ৭ জুলাই পূর্ব ভারতের প্রথম 'অ্যাডাল্ট লিভিং রিলেটেড লিভার ট্রান্সপ্ল্যান্টেশন' সফলভাবে সম্পন্ন হল। অস্ত্রোপচারের ঠিক ২০ দিন পরে রোগী সম্পূর্ণ সুস্থভাবে হাসপাতাল থেকে বাড়ি ফিরে গেলেন। সিরোসিস, মারাত্মক জন্ডিস, জিনগত ত্রুটি, ওষুধের প্রভাবে লিভারের ক্ষতি-সহ বিভিন্ন শারীরিক সমস্যায় লিভার ট্রান্সপ্ল্যান্টের প্রয়োজন হয়। লিভিং রিলেটেড লিভার ট্রান্সপ্ল্যান্টেশনে সুস্থ ব্যক্তির দেহ থেকে লিভারের কিছু অংশ নিয়ে রোগীর শরীরে প্রতিস্থাপিত করা হয়।

অ্যাপোলো গ্লেনঈগলস্ হাসপাতালে লিভার ট্রান্সপ্ল্যান্টেশন বিশ্বমানের অত্যাধুনিক প্রক্রিয়ায় হয়। দায়িত্বে প্রখ্যাত চিকিৎসক ও অ্যাপোলোর ইনস্টিটিউট অফ গ্যাস্ট্রো-এন্টারোলজির অধিকর্তা ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা ও ইন্দ্রপ্রস্থ অ্যাপোলোর প্রখ্যাত ট্রান্সপ্ল্যান্টেশন সার্জেন ডাঃ সুভাষ গুপ্ত। ৪৭ বছর বয়সী ভুটানের বাসিন্দা নরগে শেরিং দীর্ঘদিন অ্যাপোলোয় লিভারের সমস্যার জন্য ডাঃ গোয়েঙ্কার তত্ত্বাবধানে ছিলেন। সম্প্রতি তিনি হেপাটিক কোমায় চলে যান। এক্ষেত্রে লিভার ট্রান্সপ্ল্যান্টেশনই ছিল তাঁর সুস্থ হয়ে ওঠার একমাত্র রাস্তা। শেরিংয়ের স্ত্রী লিভার দান করতে রাজি ছিলেন। পরীক্ষায় শেরিংয়ের স্ত্রী 'ম্যাচিং'-এ উত্তীর্ণ হন। শুরু হয় অস্ত্রোপচার। জটিল, লম্বা এই অস্ত্রোপচারটি সফল হয়। শেরিংয়ের স্ত্রী ১০ দিন পরে সুস্থ অবস্থায় ছাড়া পান।

প্রসঙ্গত, অ্যাপোলো হাসপাতাল ১৯৮৩ সালে প্রথম পথচলা শুরু করে। চেন্নাইতে প্রথম হাসপাতাল প্রতিষ্ঠার পর অ্যাপোলো গ্রুপ এ মুহূর্তে এশিয়ার সবচেয়ে বড় হসপিটাল নেটওয়ার্ক ও বিশ্বের তৃতীয় বৃহত্তম। অ্যাপোলো পরিচালিত ৪৬টি বিভিন্ন হাসপাতালে রয়েছে ৯০,০০০টির বেশি শয্যা। বিশ্বমানের সর্বাধুনিক প্রযুক্তি প্রতিটি অ্যাপোলোর হাসপাতালে ব্যবহৃত হয়, কলকাতাও ব্যতিক্রম নয়। সফল লিভার ট্রান্সপ্ল্যান্টেশন প্রসঙ্গে অ্যাপোলো গ্লেনঈগলস হাসপাতালের চিফ একজিকিউটিভ অফিসার ডাঃ রূপালি বসু বলেন, পূর্ব ভারতে একমাত্র জে সি আই স্বীকৃত হাসপাতাল হিসেবে অ্যাপোলো হাসপাতাল সবসময় বিশ্বমানের চিকিৎসা পরিষেবা দিয়ে থাকে। শুধু তাই নয়, অ্যাপোলো হাসপাতাল দায়িত্ববোধ থেকেই সেই বিশ্বমানের চিকিৎসা সাধারণের কাছে পৌঁছে দিতে বদ্ধপরিকর।

সুদীপ্ত চক্রবর্তী

Rajasthan Patrika
28.07.10 Pg 5

पत्नी ने लीवर देकर बचाया पति को

कासं. @ कोलकाता

पति-पत्नी के संबंधों को और प्रगाढ़ बनाते हुए एक पत्नी ने अपने पति

अपोलो हास्पिटल में भूटान के नोरजय शिरिंग व इवलिन शिरिंग। पत्रिका

की जान लीवर देकर बचाई। भूटान निवासी इवलिन शिरिंग(45) को जब यह पता चला कि उनके पति की जान केवल लीवर प्रत्यारोपण से बच सकती है। उस दौरान लीवर दानदाता की खोज की गई लेकिन काफी कोशिश करने पर भी कोई तैयार नहीं हुआ। इस पर उन्होंने स्वयं ही अपना लीवर देकर पति की जान बचाने का निश्चय किया। इसके लिए परिजनों ने भी उनका उत्साहवर्द्धन किया। पति नोरजय शिरिंग(47) लीवर की समस्या से पीड़ित थे। सात जुलाई को अपोलो ग्लेनिगल्स में डॉ. महेश गोयनका के नेतृत्व में चिकित्सकों ने उनका सफल लीवर प्रत्यारोपण किया। उनकी पत्नी का करीब 50 फीसदी लीवर पति के खराब लीवर की जगह लगाया गया। वे पूर्णतः स्वस्थ होकर घर जाने के लिए तैयार हैं। इंस्टीट्यूट ऑफ गैस्ट्रोइनटोरलॉजी के निदेशक डॉ. गोयनका ने दावा किया कि यह पूर्वी भारत में पहला सफल जीवंत लीवर प्रत्यारोपण है। करीब 18-20 घण्टे के जटिल ऑपरेशन के बाद नोरजय अब आसानी से अपना आगे का जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

उनकी पत्नी ने कहा कि अपने पति को लीवर देकर उनकी जान बचाना मेरा कर्त्तव्य है। मैं खुशनसीब हूं कि मेरा लीवर देकर उनकी जान बचाई जा सकी। इस सफल ऑपरेशन के बारे में मंगलवार को अस्पताल में आयोजित एक संवाददाता सम्मेलन में जानकारी दी गई।

'समुचित खानपान व संतुलित दिनचर्या से कर सकते हैं लीवर की हिफाजत'

कोलकाता, 27 जुलाई (जनसत्ता)। 'समुचित खानपान व संतुलित दिनचर्या से हम अपने लीवर (यकृत) की अच्छी तरह से हिफाजत कर सकते हैं। आए दिन पेट यदि फूल जाए, पेट में पानी जमने लगे और कई तरह की पेट संबंधी गड़बड़ियां होने लगे तो समझ लें कि आप लीवर की बीमारी से ग्रस्त हैं।

इस रोग के बढ़ जाने पर ही मरीजों के लीवर के प्रत्यार्पण की जरूरत पड़ जाती है।' यह कहना है इंस्टीट्यूट ऑफ गैस्ट्रोएंटेरोलॉजी के निदेशक डा. महेश गोयनका का। उनकी निगरानी में अभी हाल ही में महानगर के अपोलो ग्लेनेगिल्स हास्पीटल में एक भूटान के नागरिक नोरजे शेरिंग (47) का एक सफल लीवर प्रत्यारोपण किया गया है। मंगलवार को अस्पताल परिसर में आयोजित एक प्रेस कांफ्रेंस में गोयनका ने पत्रकारों के साथ इस ऑपरेशन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि वैसे तो भारत में अब तक लीवर प्रत्यारोपण के सात-आठ सौ मामले सफलतापूर्वक निपटाए गए हैं, लेकिन पूर्वी क्षेत्र में यह पहला मामला है।

उन्होंने कहा कि इससे पहले तीन-चार वर्ष पहले अपोलो हास्पीटल की निगरानी में ही महानगर के एसएसकेएम मेडिकल कॉलेज अस्पताल में एक बच्चे का सफल लीवर प्रत्यारोपण किया गया था।

गोयनका ने बताया कि भूटानी नागरिक नोरजे शेरिंग पिछले छह साल से लीवर की बीमारी से पीड़ित थे। हमारी ही निगरानी में उनका इलाज चल रहा था। उनके पेट में अक्सर तरल पदार्थ जम जाता था। हाल ही में शेरिंग की हालत बेहद खराब हो गई और वे कोमा में जाने की स्थिति में आ गए थे। ऐसे में लीवर प्रत्यारोपण के सिवा कोई दूसरा रास्ता ही नहीं बचा था। खुशी की बात यह रही कि मरीज की पत्नी एवालिन शेरिंग (45) अपने पति को लीवर का दान देने के लिए तैयार हो गईं। गोयनका ने बताया कि बीते सात जुलाई को नोरजे शेरिंग के लीवर का प्रत्यारोपण ऑपरेशन हुआ और उसके बीस दिन के बाद वे स्वस्थ होकर अस्पताल से निकल गए।

गोयनका ने कहा कि प्रत्येक मानव शरीर में दो किडनियां होती हैं, जबकि लीवर एक ही होता है। हमारा काम एक किडनी से तो चल सकता है, वहीं अगर लीवर खराब हो जाए तो जान के लिए खतरा हो जाता है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक स्वस्थ लीवर से हम 50-60 प्रतिशत हिस्सा काटकर उसे दूसरे व्यक्ति के शरीर में प्रत्यारोपित किया जा सकता है। जिस व्यक्ति के शरीर से लीवर लिया गया है वह बाकी बचे लीवर के 40-50 प्रतिशत हिस्से से भी जीवित रह सकता है।

हालांकि उन्होंने यह भी कहा कि रक्तसंबंध से जुड़े लोग ही अपने परिजनों को लीवर का दान कर सकते हैं।

आज के समारोह में अपोलो ग्लेनिगल्स हास्पीटल की सीईओ डा. रुपाली बसु व शेरिंग दंपति समेत इस अस्पताल के डाक्टरों व नर्सों की वह टीम भी मौजूद थी जिसकी निगरानी में नोरजे शेरिंग का सफल लीवर प्रत्यारोपण किया गया।

Sanmarg | 28.07.10 Pg 4

पत्नी के लीवर से बचायी गयी पति की जान

अपोलो में हुआ पूर्वी क्षेत्र का पहला आपरेशन

कोलकाता : पत्नी धर्म निभाते हुए जब सावित्री ने अपने पति सत्यवान को यमराज के यहां से छीन लिया था तो आज के युग में ऐसा क्यों नहीं हो सकता। 45 वर्षीया एवालिन टेशेरिंग ने अपना लीवर पति के लिए स्थानांतरित करवा कर कोमा में चल गए नोरजय टेशेरिंग की जान बचायी। अपोलो अस्पताल के डाक्टरों ने पहली बार पूर्वी भारत में वयस्क संबधी लीवर स्थानांतरित कर भूटान के दम्पति को नया जीवन दिया। यहां आयोजित संवाददाता सम्मेलन में दोनों को स्वस्थ पेश कर अपोलो पूर्वी क्षेत्र की सीईओ रूपाली बसु ने कहा कि हमारे लिए पिछले कई सालों में यह सबसे बड़ी उपलब्धि है। गत 7 जुलाई को आपरेशन को अंजाम देने वाले डॉ. महेश गोयनका ने कहा कि 12-13 घंटे चले इस आपरेशन में पहली बार लीवर स्थानांतरण में सफलता मिली है।

नोरजय लीवर संक्रमण के चलते कोमा में चले गए थे और उनका जीवन काल मात्र 2 महीने का रह गया था लेकिन उनकी पत्नी ने त्याग करते हुए अपना लीवर दिया। उन्होंने बताया कि पत्नी का 55 फीसदी लीवर काट कर नोरजय को नया जीवन दिया गया। 15 लाख से कहीं ज्यादा खर्च वाले इस आपरेशन की तरह और 10 आपरेशन करने का फैसला लिया गया है।

AAJKAL

কলকাতার বুকে বিরল অস্ত্রোপচার

সফল যকৃৎ প্রতিস্থাপন বেসরকারি হাসপাতালে

আজকালের প্রতিবেদন: কলকাতার বুকে আবার বিরল অস্ত্রোপচার। এস এস কে এমে রোগীর শারীরিক সমস্যার জন্য সাময়িকভাবে স্থগিত রাখা হলেও যকৃৎ প্রতিস্থাপনের বিরল অস্ত্রোপচার হল শহরের এক বেসরকারি হাসপাতালে। বৃহস্পতিবার এস এস কে এমের স্কুল অফ ডায়াজেস্টিক অ্যান্ড লিভার ডিজিজেসে হুগলির বৈঁচির বাসিন্দা তরুণ ব্যবসায়ী অসীম মুখার্জির (৩৫) শরীরে প্রতিস্থাপন করার কথা ছিল তাঁর স্ত্রী শ্রেয়সীর যকৃতের একাংশ। কিন্তু এদিন সকালে অসীমবাবুর কার্ডিয়াক সমস্যা দেখা দেওয়ায় যকৃৎ প্রতিস্থাপন স্থগিত রাখার সিদ্ধান্ত নেন চিকিৎসকরা। রাজ্যের তৃতীয় যকৃৎ প্রতিস্থাপনের অস্ত্রোপচার স্থগিত রাখা হলেও একদিন আগে শহরের বুকে সফলভাবে হল রাজ্যের ও পূর্ব ভারতের দ্বিতীয় অস্ত্রোপচারটি। বেসরকারি অ্যাপোলো গ্লেনঈগলস হাসপাতালের চিকিৎসকরা ভুটানের এক বাসিন্দার শরীরে প্রতিস্থাপন করলেন তাঁর স্ত্রীর যকৃতের একাংশ। ৪৭ বছর বয়সী নরগায়ী শেরিং যকৃতের অসুখ নিয়ে দীর্ঘ ৬ বছর ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কার অধীনে চিকিৎসাধীন ছিলেন। সিরোসিস অফ লিভারের অসুখে ভুগছিলেন তিনি। ১৫ দিন আগে তাঁকে এই হাসপাতালে ভর্তি করা হয়। কয়েকদিন আগে কোমায় চলে যান নরগায়ী শেরিং। যকৃৎ প্রতিস্থাপনের সিদ্ধান্ত নেন চিকিৎসকরা। যকৃতের একাংশ দিতে রাজিও হয়ে যান তাঁর স্ত্রী। অ্যাপোলোর দিল্লি ও কলকাতার চিকিৎসকদের নিয়ে গড়া হয় একটি দল। বুধবার সকাল ৭টা থেকে টানা সাড়ে ১২ ঘণ্টার অস্ত্রোপচারে সফলভাবে প্রতিস্থাপন করা হয় যকৃৎ। ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা জানান, অস্ত্রোপচারের পর দুজনেই ভাল আছেন। ৮/১০ দিনের মধ্যে রোগী সম্পূর্ণ স্বাভাবিক হতে পারবেন বলে আশা করা যায়। হাসপাতালের সি ই ও ডাঃ রূপালি বসু জানান, তাঁরা বছরে ২০ থেকে ২৪টি এ ধরনের অস্ত্রোপচার করতে চান। আশা করেন, অদূর ভবিষ্যতে দিল্লির চিকিৎসকদের সাহায্য ছাড়াই কলকাতার চিকিৎসকরা এরকম বিরল অস্ত্রোপচার করতে পারবেন। প্রসঙ্গত, গত বছর এপ্রিল মাসে এস এস কে এমের স্কুল অফ ডায়াজেস্টিক অ্যান্ড লিভার ডিজিজেসে পূর্ব ভারতের প্রথম যকৃৎ প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল। ৭ মাস বয়সী রোশন আলির শরীরে প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল তার বাবার যকৃতের একাংশ। পিতা-পুত্র দুজনেই এখন সুস্থ আছেন বলে হাসপাতাল সূত্রে জানা গেছে। কয়েক মাস আগে এখানেই জয়ন্তী চাটার্জির শরীরে মস্তিষ্কের মৃত্যু হওয়া একজনের যকৃৎ প্রতিস্থাপন করা হয়। কিন্তু সেক্ষেত্রে রোগীকে বাঁচানো যায়নি।

নরগায়ী শেরিংয়ের শরীরে প্রতিস্থাপন করা হয়েছে তাঁর স্ত্রীর যকৃতের একাংশে। অস্ত্রোপচারের আগে দম্পতি। ছবি: শিখর কর্মকার

ANANDBAZAR PATRIKA

স্ত্রীর যকৃতের অংশ কেটে স্বামীর দেহে

নিজস্ব সংবাদদাতা: বাবার যকৃতের অংশ কেটে দেড় বছরের অসুস্থ শিশুপুত্রের দেহে প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল আগেই। এ বার স্ত্রীর যকৃতের অংশ কেটে নিয়ে প্রতিস্থাপন করা হল স্বামীর দেহে। এই নিয়ে তৃতীয় বার রাজ্যে যকৃৎ প্রতিস্থাপন করলেন চিকিৎসকেরা। বাইপাসের ধারে একটি বেসরকারি হাসপাতালে বুধবার চিকিৎসকেরা প্রায় ১১ ঘণ্টা ধরে এই জটিল অস্ত্রোপচার করেন।

রাজ্যে প্রথম বার যকৃৎ প্রতিস্থাপন হয়েছিল এসএসকেএম হাসপাতালে। সে-বার বাবার যকৃতের অংশ প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল তাঁর দেড় বছরের ছেলের দেহে। সফল অস্ত্রোপচারে সুস্থ জীবন ফিরে পেয়েছিল শিশুটি। তার পরে এসএসকেএমেই এক মৃত ব্যক্তির দেহ থেকে যকৃৎ নিয়ে এক রোগিণীর দেহে প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল। কিন্তু সেই অস্ত্রোপচার সফল হয়নি। রোগিণীর মৃত্যু হয় অস্ত্রোপচারের পরের দিনেই।

বুধবার বেসরকারি হাসপাতালে ভুটানের বাসিন্দা, ৪৫ বছরের এক ব্যক্তির শরীরে যকৃৎ প্রতিস্থাপন করা হয়। রাজ্যে এই প্রথম কোনও পূর্ণবয়স্ক মানুষের যকৃতের অংশ প্রতিস্থাপিত হল অন্য কোনও পূর্ণবয়স্কের শরীরে। চিকিৎসকেরা জানান, সাত বছর ধরে ওই ব্যক্তি সিরোসিস অফ লিভারে ভুগছিলেন। হাসপাতালের গ্যাসট্রোএন্টেরোলজি বিভাগের প্রধান মহেশ গোয়েনকা বলেন, "অস্ত্রোপচারের সাত দিন আগে রোগী এক বার কোমায় চলে গিয়েছিলেন। আমরা ভেবেছিলাম, অস্ত্রোপচার বাতিল করতে হবে।" শেষ পর্যন্ত অবশ্য তা করতে হয়নি। মহেশবাবু জানান, কোনও শিশুর যকৃৎ প্রতিস্থাপন করতে গেলে দাতার থেকে যকৃতের অল্প অংশ পেলেই হয়ে যায়। কিন্তু পূর্ণবয়স্ক মানুষের ক্ষেত্রে দাতার যকৃতের ৪০-৫০ শতাংশ অংশ কেটে নিতে হয়। এতে দাতার শারীরিক অবস্থা যাতে খারাপ না-হয়, নজর রাখতে হয় সে-দিকেও। এই প্রতিস্থাপনের ক্ষেত্রে দাতার যকৃৎ কাটতে সময় লেগেছে আট ঘণ্টা এবং গ্রহীতার দেহে সেটি প্রতিস্থাপনে সময় লেগেছে ১১ ঘণ্টা। দু'টি অস্ত্রোপচারই একসঙ্গে চলায় মোট সময় লেগেছে ১১ ঘণ্টাই। স্বামী-স্ত্রী দু'জনেই ভাল আছেন। অস্ত্রোপচারে খরচ হয়েছে প্রায় ১৫ লক্ষ টাকা।

বৃহস্পতিবার এসএসকেএম হাসপাতালে এক ব্যক্তির যকৃৎ প্রতিস্থাপনের কথা ছিল। এ ক্ষেত্রেও যকৃৎদাতা ছিলেন তাঁর স্ত্রী। কিন্তু হঠাৎ ওই ব্যক্তির শারীরিক অবস্থার অবনতি হওয়ায় অস্ত্রোপচার বাতিল করা হয়।

HT Live Kolkata, Friday, July 9, 2010
www.hindustantimes.com

Liver transplant

KOLKATA: A woman donated a part of her liver to save the life of her husband on Wednesday. A team of doctors comprising gastro-surgeons, hepatologists, cardiologists and anaesthesiologists performed the surgery on a 45-year-old patient from Bhutan at Apollo Gleneagles Hospital. The operation started at 7 am and ran into 12 hours. The transplant cost around Rs 15 lakh. **HTC**

जनपथ समाचार

सिलीगुड़ी 9 जुलाई 2010

अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल में जीवित दाता की लीवर स्थापना

कोलकाता (निज संवाददाता)। अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल कोलकाता ने ७ जुलाई २०१० को लीवर स्थापना के क्षेत्र में अपना पहला आपरेशन का काम सफलतापूर्वक पूरा किया।

इस मामले में जीवित लीवरदाता होने के कारण अस्पताल ने इस आपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम देकर एक और मील का पत्थर लगाने का काम किया है।

इस काम को अंजाम देने वाले अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल की टीम का नेतृत्व डा. महेश गोयनका, गैस्ट्रोइनटेरोलॉजी संस्थान के निदेशक और ख्याति प्राप्त सर्जन डा. सुभाष गुप्ता, वरिष्ठ सलाहकार, इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल, नई दिल्ली और टीम ने किया।

लीवर प्रतिष्ठा का यह काम ४७ वर्षीय भूटानी नागरिक का किया गया। उनकी ४५ वर्षीय पत्नी ने अपने पति के लिए लीवर दान दिया। दोनों की स्थिति स्थितिशील है। डा. महेश गोयनका ने बताया कि जल्द ही उनके अच्छे होने की आशा है।

डा. रूपाली बसु प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए।

ज्ञात हो कि नई दिल्ली के अपोलो अस्पताल ग्रुप की सहायता से अब अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल कोलकाता में ही लीवर प्रतिष्ठा प्रोग्राम की व्यवस्था कर ली गई है। इसके अलावा इस काम के लिए अस्पताल के शल्य चिकित्सकों और अन्य चिकित्साकर्मियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

जनपथ समाचार

सिलीगुड़ी 9 जुलाई 2010

अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल में जीवित दाता की लीवर स्थापना

कोलकाता (निज संवाददाता)। अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल कोलकाता ने ७ जुलाई २०१० को लीवर स्थापना के क्षेत्र में अपना पहला आपरेशन का काम सफलतापूर्वक पूरा किया।

इस मामले में जीवित लीवरदाता होने के कारण अस्पताल ने इस आपरेशन को सफलतापूर्वक अंजाम देकर एक और मील का पत्थर लगाने का काम किया है।

इस काम को अंजाम देने वाले अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल की टीम का नेतृत्व डा. महेश गोयनका, गैस्ट्रोइनटेरोलॉजी संस्थान के निदेशक और ख्याति प्राप्त सर्जन डा. सुभाष गुप्ता, वरिष्ठ सलाहकार, इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल, नई दिल्ली और टीम ने किया।

लीवर प्रतिष्ठा का यह काम ४७ वर्षीय भूटानी नागरिक का किया गया। उनकी ४५ वर्षीय पत्नी ने अपने पति के लिए लीवर दान दिया। दोनों की स्थिति स्थितिशील है। डा. महेश गोयनका ने बताया कि जल्द ही उनके अच्छे होने की आशा है।

डा. रूपाली बसु प्रेस कांफ्रेंस को संबोधित करते हुए।

ज्ञात हो कि नई दिल्ली के अपोलो अस्पताल ग्रुप की सहायता से अब अपोलो ग्लेनीगलेस अस्पताल कोलकाता में ही लीवर प्रतिष्ठा प्रोग्राम की व्यवस्था कर ली गई है। इसके अलावा इस काम के लिए अस्पताल के शल्य चिकित्सकों और अन्य चिकित्साकर्मियों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

SANGBAD PRATIDIN

প্রাপ্তবয়স্কের লিভার প্রতিস্থাপনে নজির অ্যাপেলো গ্লেনিগেলসের

স্টাফ রিপোর্টার : প্রাপ্তবয়স্কদের লিভার প্রতিস্থাপনে নজির সৃষ্টি করল কলকাতার অ্যাপোলো গ্লেনিগেলস হাসপাতাল। পূর্ব ভারতে বেসরকারি কোনও হাসপাতালে এই প্রথম প্রাপ্তবয়স্কদের লিভার প্রতিস্থাপন হল। শুধু তাই নয়, কলকাতার অ্যাপোলো হাসপাতালে জীবিতর শরীর থেকেই লিভার নিয়ে প্রতিস্থাপন করা হয়েছে। এখানে দাতা স্ত্রী। আর গ্রহীতা স্বামী। নিজের লিভারের একটা অংশ নিয়ে স্বামীর প্রাণ বাঁচালেন স্ত্রী। বুধবার এই অস্ত্রোপচারটি হয়। আর এই লিভার প্রতিস্থাপনে কলকাতার অ্যাপোলো হাসপাতালের টিমের প্রধান ছিলেন হাসপাতালেরই ইনস্টিটিউট অফ গ্যাসট্রোএনট্রোলজির ডিরেকটর ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা। এই টিমকে সহায়তা করেন দিল্লির ইন্দ্রপ্রস্থ অ্যাপোলোর ডাঃ সুভাষ গুপ্ত ও তাঁর টিম।

গ্রহীতা স্বামী — দাতা স্ত্রী

লিভারের দাতা ও গ্রহীতা অর্থাৎ স্বামী-স্ত্রী দু'জনেই ভুটানের বাসিন্দা। স্বামীর বয়স ৪৭ বছর। স্ত্রীর ৪৫ বছর। ওই ব্যক্তির লিভারের শেষ অবস্থায় রোগটি ধরা পড়ে। সিরোসিস অফ লিভারে তিনি ভুগছিলেন। গত ছয় বছর ধরে তিনি ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কার অধীনে চিকিৎসাধীন রয়েছেন। এই অসুস্থতা চলাকালীন বর্তমানে তিনি হেপাটিক কোমায় ভুগছিলেন। পেট ফুলে গিয়ে শরীর ক্রমশ রোগা হয়ে যাচ্ছিল। বুধবার এই লিভার প্রতিস্থাপন প্রক্রিয়াটি শেষ হতে সময় লাগে ১৭ ঘণ্টা। বিশেষজ্ঞ চিকিৎসক, সার্জেন, অ্যানাসথেসিস্ট মিলিয়ে মোট ৩২ জনের একটি টিম ছিলেন। প্রথমে মহিলার শরীর থেকে লিভারের ৪০ শতাংশ কেটে নেওয়া হয়। স্বামী ও স্ত্রী দু'জনের রক্তের গ্রুপই ছিল বি-পজেটিভ। প্রথমপর্বটি শেষ হতে ছয় ঘণ্টা সময় লাগে। এরপর স্বামীর শরীরে স্ত্রীর লিভারটি প্রতিস্থাপন করতে সময় লাগে ১১ ঘণ্টা। আপাতত টানা ২২দিন দু'জনকেই বিশেষ পর্যবেক্ষণে রাখা হবে। অ্যাপোলো হাসপাতালের সিইও ডাঃ রূপালি বসু জানিয়েছেন, প্রাপ্তবয়স্কদের লিভার প্রতিস্থাপন পূর্ব ভারতে এই প্রথম সাফল্যের সঙ্গে করল কলকাতার অ্যাপোলো গ্লেনিগেলস হাসপাতাল। এবার ধারাবাহিকভাবে এই প্রক্রিয়া চলবে। আর প্রতিস্থাপনের খরচটাও যাতে সাধারণের আয়ত্তের মধ্যে থাকে সেটা দেখা হবে। তিনি আরও জানান, সরকারি হাসপাতালেও অ্যাপোলোর একটি টিম এই প্রতিস্থাপনের কাজে সহায়তা করে চলেছে। ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা জানান, এটা টিম অ্যাপোলোর সাফল্য।

TIMES CITY

THE TIMES OF INDIA, KOLKATA | THURSDAY, JULY 8, 2010

Women donate parts of liver to give husbands fresh lease of life

Sumati Yengkhom | TNN

Kolkata: It's an attempt by two women to give a second life to their respective husbands by donating a part of their liver. While one of the liver transplants was conducted at Apollo Gleneagles Hospitals on Wednesday, the other will be done at SSKM Hospital on Thursday.

In the first liver transplant by a private hospital in the eastern region, doctors at the Apollo Gleneagles Hospitals conducted the complicated surgery on 45-year-old Bhutanese patient Norgaye Tshering. The administrative officer at a cement plant in Bhutan has been suffering from cirrhosis of the liver for the past six years. Though he was undergoing treatment at Apollo Hospital, complications had started developing. Tshering had slipped into a coma several times in the past year or so, the last one being just around five days back.

That is when doctors decided to conduct a liver transplant, the only option left. Luckily, they did not have to hunt for a donor as Tshering's blood matched that of his wife E Tshering, who was more than willing to part with a portion of her liver. The marathon surgery started around 7.30 am on Wednesday and continued for almost 13 hours.

"The surgery was successful, but the post-operative part is still to be taken care of. Therefore, I would say only half the battle is won. It will take around 20 more days before the patient gets well enough to be discharged," said Dr Mahesh Goenka, director of the gasteroenterology wing at the Apollo Hospitals.

The Apollo Hospitals in other cities, like New Delhi, has been conducting liver transplants for a few years now. The Kolkata wing had been preparing for a year by upgrading the infrastructure, equipment, expertise and getting permission for conducting liver transplant.

Biplab Bhattacharjee

Asim Mukherjee and his wife Sreyashi at SSKM Hospital

"Around 600 patients from Bhutan come to Kolkata every year. Hospitals in Kolkata are important to patients from our country because they get quality treatment at affordable prices. Plus there is the proximity factor. This liver transplant will encourage more patients to come to Kolkata," said Bhutan consul-general Tshering Wangda.

On Thursday, SSKM's School of Digestive and Liver Diseases (SDLD) will conduct its third liver transplant on Asim Mukherjee of Hooghly. The 35-year-old owner of a small medicine shop in Hooghly's Bachin has also been suffering from cirrhosis of the liver for a few years. He had to be hospitalised six times in the past year due to complications.

Mukherjee was admitted to SDLD about three months ago. For the past three months, doctors had been frantically searching for a cadaver donor. Though his wife Sreyashi (28) was ready to donate a part of her liver, doctors wanted a brain-dead victim as in that case, the transplant would involve just one life.

"We had even got two very good cases of brain-dead patients. But at the last moment, the relatives refused to donate the organs. In some other cities, there are several cases of cadaver transplants. Unfortunately, due to lack of awareness and mental block, it is not happening in this state. Asim's wife, who has a four-year-son, will be the donor now," said SDLD head, Dr Abhijit Chowdhury.

The state government will give a free bed and some medicines to Mukherjee. The Liver Foundation, West Bengal, is also chipping with funds for the surgery.

Last April, SDLD created history by conducting the first liver transplant in eastern India. It was on a seven-month old boy Roushan Ali. His father had donated a part of his liver for the transplant. Both are living normal lives now.

ANANDBAZAR PATRIKA

আট। আনন্দবাজার পত্রিকা কলকাতা শুক্রবার ৯ জুলাই ২০১০

স্ত্রীর যকৃতের অংশ কেটে স্বামীর দেহে

নিজস্ব সংবাদদাতা: বাবার যকৃতের অংশ কেটে দেড় বছরের অসুস্থ শিশুপুত্রের দেহে প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল আগেই। এ বার স্ত্রীর যকৃতের অংশ কেটে নিয়ে প্রতিস্থাপন করা হল স্বামীর দেহে। এই নিয়ে তৃতীয় বার রাজ্যে যকৃৎ প্রতিস্থাপন করলেন চিকিৎসকেরা। বাইপাসের ধারে একটি বেসরকারি হাসপাতালে বুধবার চিকিৎসকেরা প্রায় ১১ ঘণ্টা ধরে এই জটিল অস্ত্রোপচার করেন।

রাজ্যে প্রথম বার যকৃৎ প্রতিস্থাপন হয়েছিল এসএসকেএম হাসপাতালে। সে-বার বাবার যকৃতের অংশ প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল তাঁর দেড় বছরের ছেলের দেহে। সফল অস্ত্রোপচারে সুস্থ জীবন ফিরে পেয়েছিল শিশুটি। তার পরে এসএসকেএমেই এক মৃত ব্যক্তির দেহ থেকে যকৃৎ নিয়ে এক রোগিণীর দেহে প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল। কিন্তু সেই অস্ত্রোপচার সফল হয়নি। রোগিণীর মৃত্যু হয় অস্ত্রোপচারের পরের দিনেই।

বুধবার বেসরকারি হাসপাতালে ভুটানের বাসিন্দা, ৪৫ বছরের এক ব্যক্তির শরীরে যকৃৎ প্রতিস্থাপন করা হয়। রাজ্যে এই প্রথম কোনও পূর্ণবয়স্ক মানুষের যকৃতের অংশ প্রতিস্থাপিত হল অন্য কোনও পূর্ণবয়স্কের শরীরে। চিকিৎসকেরা জানান, সাত বছর ধরে ওই ব্যক্তি সিরোসিস অফ লিভারে ভুগছিলেন। হাসপাতালের গ্যাসট্রোএন্টেরোলজি বিভাগের প্রধান মহেশ গোয়েনকা বলেন, "অস্ত্রোপচারের সাত দিন আগে রোগী এক বার কোমায় চলে গিয়েছিলেন। আমরা ভেবেছিলাম, অস্ত্রোপচার বাতিল করতে হবে।" শেষ পর্যন্ত অবশ্য তা করতে হয়নি। মহেশবাবু জানান, কোনও শিশুর যকৃৎ প্রতিস্থাপন করতে গেলে দাতার থেকে যকৃতের অল্প অংশ পেলেই হয়ে যায়। কিন্তু পূর্ণবয়স্ক মানুষের ক্ষেত্রে দাতার যকৃতের ৪০-৫০ শতাংশ অংশ কেটে দিতে হয়। এতে দাতার শারীরিক অবস্থা যাতে খারাপ না-হয়, নজর রাখতে হয় সে-দিকেও। এই প্রতিস্থাপনের ক্ষেত্রে দাতার যকৃৎ কাটতে সময় লেগেছে আট ঘণ্টা এবং গ্রহীতার দেহে সেটি প্রতিস্থাপনে সময় লেগেছে ১১ ঘণ্টা। দু'টি অস্ত্রোপচারই একসঙ্গে চলায় মোট সময় লেগেছে ১১ ঘণ্টাই। স্বামী-স্ত্রী দু'জনেই ভাল আছেন। অস্ত্রোপচারে খরচ হয়েছে প্রায় ১৫ লক্ষ টাকা।

বৃহস্পতিবার এসএসকেএম হাসপাতালে এক ব্যক্তির যকৃৎ প্রতিস্থাপনের কথা ছিল। এ ক্ষেত্রেও যকৃৎদাতা ছিলেন তাঁর স্ত্রী। কিন্তু হঠাৎ ওই ব্যক্তির শারীরিক অবস্থার অবনতি হওয়ায় অস্ত্রোপচার বাতিল করা হয়।

HT Live Kolkata, Friday, July 9, 2010
www.hindustantimes.com

Liver transplant

KOLKATA: A woman donated a part of her liver to save the life of her husband on Wednesday.

A team of doctors comprising gastro-surgeons, hepatologists, cardiologists and anaesthesiologists performed the surgery on a 45-year-old patient from Bhutan at Apollo Gleneagles Hospital. The operation started at 7 am and ran into 12 hours. The transplant cost around Rs 15 lakh. **HTC**

THE STATESMAN KOLKATA FRIDAY 9 JULY 2010

Surgery of sorts!

KOLKATA 8 July: The first liver transplant from an adult, live donor was successfully performed at a private hospital here yesterday.

The patient Mr Norgaye Tshering (47) a resident of Bhutan was suffering from cirrhosis of the liver for the past six years. He was admitted to Apollo Gleneagles Hospital three days back with critical liver disorder but was given a fresh lease of life by his wife, who donated 40 per cent of her liver.

According to Dr Goenka , director of gastroenterology, Apollo Gleanagles Kolkata, the patient slipped into a hepatic coma.

He was then shifted to Intensive Thoracic Unit (ITU) three days back. A team of doctors from Apollo Gleneagles Hospital , Delhi assisted him during conducting the surgery. At first they were not sure whether they could conduct the surgery as Mr Tshering's condition was not well.

But when he was administered a heavy dose of antibiotics and he recovered slowly. Dr Goenka also said that it took more than 12 hours to conduct the surgery.

Mr Tshering's blood matched that of his wife Mrs E Tshering, who was willing to donate a portion of her liver. The surgery started around 7.30 am on Wednesday and continued for almost 13 hours.

He also said both the patients had to be kept in the hospital for almost 10 days. Their condition is stated to be stable . The team of doctors will also conduct a similar surgery at SSKM Hospital soon. Dr Rupali Basu, CEO of the hospital said they are trying to conduct more such surgeries in their hospital as the demand for liver transplant is high in the city. **SNS**

SANGBAD PRATIDIN

সংবাদ প্রতিদিন, শুক্রবার ৯ জুলাই ২০১০ ৭

প্রাপ্তবয়স্কের লিভার প্রতিস্থাপনে নজির অ্যাপেলো গ্লেনিগেলসের

স্টাফ রিপোর্টার : প্রাপ্তবয়স্কদের লিভার প্রতিস্থাপনে নজির সৃষ্টি করল কলকাতার অ্যাপোলো গ্লেনিগেলস হাসপাতাল। পূর্ব ভারতে বেসরকারি কোনও হাসপাতালে এই প্রথম প্রাপ্তবয়স্কদের লিভার প্রতিস্থাপন হল। শুধু তাই নয়, কলকাতার অ্যাপোলো হাসপাতালে জীবিতর শরীর থেকেই লিভার নিয়ে প্রতিস্থাপন করা হয়েছে। এখানে দাতা স্ত্রী। আর গ্রহীতা স্বামী। নিজের লিভারের একটা অংশ দিয়ে স্বামীর প্রাণ বাঁচালেন স্ত্রী। বুধবার এই অস্ত্রোপচারটি হয়। আর এই লিভার প্রতিস্থাপনে কলকাতার অ্যাপোলো হাসপাতালের টিমের প্রধান ছিলেন হাসপাতালেরই ইনস্টিটিউট অফ গ্যাসট্রোএনট্রোলজির ডিরেকটর ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা। এই টিমকে সহায়তা করেন দিল্লির ইন্দ্রপ্রস্থ অ্যাপোলোর ডাঃ সুভাষ গুপ্ত ও তাঁর টিম।

লিভারের দাতা ও গ্রহীতা অর্থাৎ স্বামী-স্ত্রী দু'জনেই ভুটানের বাসিন্দা। স্বামীর বয়স ৪৭ বছর। স্ত্রীর ৪৫ বছর। ওই ব্যক্তির লিভারের শেষ অবস্থায় রোগটি ধরা পড়ে। সিরোসিস অফ লিভারে তিনি ভুগছিলেন। গত ছয় বছর ধরে তিনি ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কার অধীনে চিকিৎসাধীন রয়েছেন। এই অসুস্থতা চলাকালীন বর্তমানে তিনি হেপাটিক কোমায় ভুগছিলেন। পেট ফুলে গিয়ে শরীর ক্রমশ রোগা হয়ে যাচ্ছিল। বুধবার এই লিভার প্রতিস্থাপন প্রক্রিয়াটি শেষ হতে সময় লাগে ১৭ ঘণ্টা। বিশেষজ্ঞ চিকিৎসক, সার্জেন, অ্যানাসথেসিস্ট মিলিয়ে মোট ৩২ জনের একটি টিম ছিলেন। প্রথমে মহিলার শরীর থেকে লিভারের ৪০ শতাংশ কেটে নেওয়া হয়। স্বামী ও স্ত্রী দু'জনের রক্তের গ্রুপই ছিল বি-পজেটিভ। প্রথমপর্বটি শেষ হতে ছয় ঘণ্টা সময় লাগে। এরপর স্বামীর শরীরে স্ত্রীর লিভারটি প্রতিস্থাপন করতে সময় লাগে ১১ ঘণ্টা। আপাতত টানা ২২দিন দু'জনকেই বিশেষ পর্যবেক্ষণে রাখা হবে। অ্যাপোলো হাসপাতালের সিইও ডাঃ রূপালি বসু জানিয়েছেন, প্রাপ্তবয়স্কদের লিভার প্রতিস্থাপন পূর্ব ভারতে এই প্রথম সাফল্যের সঙ্গে করল কলকাতার অ্যাপোলো গ্লেনিগেলস হাসপাতাল। এবার ধারাবাহিকভাবে এই প্রক্রিয়া চলবে। আর প্রতিস্থাপনের খরচটাও যাতে সাধারণের আয়ত্তের মধ্যে থাকে সেটা দেখা হবে। তিনি আরও জানান, সরকারি হাসপাতালেও অ্যাপোলোর একটি টিম এই প্রতিস্থাপনের কাজে সহায়তা করে চলেছে। ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা জানান, এটা টিম অ্যাপোলোর সাফল্য।

AAJKAL

(দুই) আজকাল কলকাতা ৯ জুলাই ২০১০

কলকাতার বুকে বিরল অস্ত্রোপচার

সফল যকৃৎ প্রতিস্থাপন বেসরকারি হাসপাতালে

আজকালের প্রতিবেদন: কলকাতার বুকে আবার বিরল অস্ত্রোপচার। এস এস কে এমে রোগীর শারীরিক সমস্যার জন্য সাময়িকভাবে স্থগিত রাখা হলেও যকৃৎ প্রতিস্থাপনের বিরল অস্ত্রোপচার হল শহরের এক বেসরকারি হাসপাতালে। বৃহস্পতিবার এস এস কে এমের স্কুল অফ ডায়জেস্টিক অ্যান্ড লিভার ডিজিজেসে হুগলির বৈঁচির বাসিন্দা তরুণ ব্যবসায়ী অসীম মুখার্জির (৩৫) শরীরে প্রতিস্থাপন করার কথা ছিল তাঁর স্ত্রী শ্রেয়সীর যকৃতের একাংশ। কিন্তু এদিন সকালে অসীমবাবুর কার্ডিয়াক সমস্যা দেখা দেওয়ায় যকৃৎ প্রতিস্থাপন স্থগিত রাখার সিদ্ধান্ত নেন চিকিৎসকরা। রাজ্যের তৃতীয় যকৃৎ প্রতিস্থাপনের অস্ত্রোপচার স্থগিত রাখা হলেও একদিন আগে শহরের বুকে সফলভাবে হল রাজ্যের ও পূর্ব ভারতের দ্বিতীয় অস্ত্রোপচারটি। বেসরকারি অ্যাপোলো গ্লেনঈগলস হাসপাতালের চিকিৎসকরা ভুটানের এক বাসিন্দার শরীরে প্রতিস্থাপন করলেন তাঁর স্ত্রীর যকৃতের একাংশে। ৪৭ বছর বয়সী নরগায়ী শেরিং যকৃতের অসুখ নিয়ে দীর্ঘ ৬ বছর ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কার অধীনে চিকিৎসাধীন ছিলেন। সিরোসিস অফ লিভারের অসুখে ভুগছিলেন তিনি। ১৫ দিন আগে তাঁকে এই হাসপাতালে ভর্তি করা হয়। কয়েকদিন আগে কোমায় চলে যান নরগায়ী শেরিং। যকৃৎ প্রতিস্থাপনের সিদ্ধান্ত নেন চিকিৎসকরা। যকৃতের একাংশ দিতে রাজিও হয়ে যান তাঁর স্ত্রী। অ্যাপোলোর দিল্লি ও কলকাতার চিকিৎসকদের নিয়ে গড়া হয় একটি দল। বুধবার সকাল ৭টা থেকে টানা সাড়ে ১২ ঘণ্টার অস্ত্রোপচারে সফলভাবে প্রতিস্থাপন করা হয় যকৃৎ। ডাঃ মহেশ গোয়েঙ্কা জানান, অস্ত্রোপচারের পর দুজনেই ভাল আছেন। ৮/১০ দিনের মধ্যে রোগী সম্পূর্ণ স্বাভাবিক হতে পারবেন বলে আশা করা যায়। হাসপাতালের সি ই ও ডাঃ রূপালি বসু জানান, তাঁরা বছরে ২০ থেকে ২৪টি এ ধরনের অস্ত্রোপচার করতে চান। আশা করেন, অদূর ভবিষ্যতে দিল্লির চিকিৎসকদের সাহায্য ছাড়াই কলকাতার চিকিৎসকরা এরকম বিরল অস্ত্রোপচার করতে পারবেন। প্রসঙ্গত, গত বছর এপ্রিল মাসে এস এস কে এমের স্কুল অফ ডায়জেস্টিক অ্যান্ড লিভার ডিজিজেসে পূর্ব ভারতের প্রথম যকৃৎ প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল। ৭ মাস বয়সী রোশন আলির শরীরে প্রতিস্থাপন করা হয়েছিল তার বাবার যকৃতের একাংশ। পিতা-পুত্র দুজনেই এখন সুস্থ আছেন বলে হাসপাতাল সূত্রে জানা গেছে। কয়েক মাস আগে এখানেই জয়ন্তী চ্যাটার্জির শরীরে মস্তিষ্কের মৃত্যু হওয়া একজনের যকৃৎ প্রতিস্থাপন করা হয়। কিন্তু সেক্ষেত্রে রোগীকে বাঁচানো যায়নি।

নরগায়ী শেরিংয়ের শরীরে প্রতিস্থাপন করা হয়েছে তাঁর স্ত্রীর যকৃতের একাংশে। অস্ত্রোপচারের আগে দম্পতি। ছবি: শিখর কর্মকার

THE STATESMAN KOLKATA FRIDAY 9 JULY 2010

Surgery of sorts!

KOLKATA 8 July: The first liver transplant from an adult, live donor was successfully performed at a private hospital here yesterday.

The patient Mr Norgaye Tshering (47) a resident of Bhutan was suffering from cirrhosis of the liver for the past six years. He was admitted to Apollo Gleneagles Hospital three days back with critical liver disorder but was given a fresh lease of life by his wife, who donated 40 per cent of her liver.

According to Dr Goenka , director of gastroenterology, Apollo Gleanagles Kolkata, the patient slipped into a hepatic coma.

He was then shifted to Intensive Thoracic Unit (ITU) three days back. A team of doctors from Apollo Gleneagles Hospital , Delhi assisted him during

conducting the surgery. At first they were not sure whether they could conduct the surgery as Mr Tshering's condition was not well.

But when he was administered a heavy dose of antibiotics and he recovered slowly.

Dr Goenka also said that it took more than 12 hours to conduct the surgery.

Mr Tshering's blood matched that of his wife Mrs F Tshering, who was willing to donate a portion of her liver. The surgery started around 7:30 am on Wednesday and continued for almost 13 hours.

He also said both the patients had to be kept in the hospital for almost 10 days. Their condition is stated to be stable . The team of doctors will also conduct a similar surgery at SSKM Hospital soon. Dr Rupali Basu, CEO of the hospital said they are trying to conduct more such surgeries in their hospital as the demand for liver transplant is high in the city. II SNS

TIMES CITY
THE TIMES OF INDIA, KOLKATA | THURSDAY, JULY 8, 2010

Women donate parts of liver to give husbands fresh lease of life

Sumati Yengkhom | TNN

Kolkata: It's an attempt by two women to give a second life to their respective husbands by donating a part of their liver. While one of the liver transplants was conducted at Apollo Gleneagles Hospitals on Wednesday, the other will be done at SSKM Hospital on Thursday.

In the first liver transplant by a private hospital in the eastern region, doctors at the Apollo Gleneagles Hospitals conducted the complicated surgery on 45-year-old Bhutanese patient Norgaye Tshering. The administrative officer at a cement plant in Bhutan has been suffering from cirrhosis of the liver for the past six years. Though he was undergoing treatment at Apollo Hospital, complications had started developing. Tshering had slipped into a coma several times in the past year or so, the last one being just around five days back.

That is when doctors decided to conduct a liver transplant, the only option left. Luckily, they did not have to hunt for a donor as Tshering's blood matched that of his wife E Tshering, who was more than willing to part with a portion of her liver. The marathon surgery started around 7.30 am on Wednesday and continued for almost 13 hours.

"The surgery was successful, but the post-operative part is still to be taken care of. Therefore, I would say only half the battle is won. It will take around 20 more days before the patient gets well enough to be discharged," said Dr Mahesh Goenka, director of the gasteroenterology wing at the Apollo Hospitals.

The Apollo Hospitals in other cities, like New Delhi, has been conducting liver transplants for a few years now. The Kolkata wing had been preparing for a year by upgrading the infrastructure, equipment, expertise and getting permission for conducting liver transplant.

Biplab Bhattacharjee

Asim Mukherjee and his wife Sreyashi at SSKM Hospital

"Around 600 patients from Bhutan come to Kolkata every year. Hospitals in Kolkata are important to patients from our country because they get quality treatment at affordable prices. Plus there is the proximity factor. This liver transplant will encourage more patients to come to Kolkata," said Bhutan consul-general Tshering Wangda.

On Thursday, SSKM's School of Digestive and Liver Diseases (SDLD) will conduct its third liver transplant on Asim Mukherjee of Hooghly. The 35-year-old owner of a small medicine shop in Hooghly's Bachin has also been suffering from cirrhosis of the liver for a few years. He had to be hospitalised six times in the past year due to complications.

Mukherjee, was admitted to SDLD about three months ago. For the past three months, doctors had been frantically searching for a cadaver donor. Though his wife Sreyashi (28) was ready to donate a part of her liver, doctors wanted a brain-dead victim as in that case, the transplant would involve just one life.

"We had even got two very good cases of brain-dead patients. But at the last moment, the relatives refused to donate the organs. In some other cities, there are several cases of cadaver transplants. Unfortunately, due to lack of awareness and mental block, it is not happening in this state. Asim's wife, who has a four-year-son, will be the donor now," said SDLD head, Dr Abhijit Chowdhury.

The state government will give a free bed and some medicines to Mukherjee. The Liver Foundation, West Bengal, is also chipping with funds for the surgery.

Last April, SDLD created history by conducting the first liver transplant in eastern India. It was on a seven-month old boy Roushan Ali. His father had donated a part of his liver for the transplant. Both are living normal lives now.